प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 21 * SEP 2008 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Voice 001	25				सीताजी द्वारा भगवान राम का नि० नि० स्वरुप निरूपण, राम ही जीवन का सार है ।	
2	Voice 002	32				गीता - अ० ८, कर्मयोग : कर्म उपासना ज्ञान से सद्य मुक्ति	
3	Voice 003	30				राम से अधिक राम का नाम, राम और सीता का अभेद निरूपण, रामावतार का हेतु शिक्षा	
4	Voice 004	45				गीता - अ० ४/१६-१६ कर्म : कर्म-विकर्म-अकर्म विभाग एवं आत्म ज्ञान	1
5	Voice 005	25				पाँच माताओं का वर्णन	
6	Voice 006	38				गीता - अ० ४/१८-२४ कर्म : कर्म-विकर्म-अकर्म विभाग एवं आत्म ज्ञान	2
7	Voice 007	35				भगवान अपने भक्तों सदैव अहैतुकी कृपा करते हैं, राजा शीलनिधि की कन्या विश्वमोहिनी एवं नारद मोह प्रसंग	
8	Voice 008	36				गीता - अ० ४/३६-३६ कर्म : गीताज्ञान ही अमृत है	3
9	Voice 009	35				गीता - अ० ४/२४ अद्वितीय ब्रह्म ही सत्य है, ये चराचर जगत मानस कल्पना है	4
10	Voice 010	45				गीता - अ० ४/३८-३६ आत्मा पवित्रतम व देह मलिन है, ज्ञान से सद्यमुक्ति व प्रारब्ध भोग	5
11	Voice 011	40				गीता - अ० ४/३८ एवं ३/४२, ६/२, १५/१२-१५, १३/१८	6
12	Voice 012	35				गीता - अ० ४/४०-४२	7
13	Voice 013	30				गीता - अ० ७/२५	
14	Voice 014	44				दान की महिमा, जगत का कारण अज्ञान व इसकी २ शक्तियाँ आवरण और विक्षेप, व्यक्तिगतधर्म से राजधर्म श्रेष्ठ	
15	Voice 015	45				गीता - अ० ४/२४ एवं **भ्रांति के पाँच प्रकार**	8
16	Voice 016	30				भगवान का नि० नि० व स० सा० स्वरूप निरूपण एवं स० सा० का प्रयोजन	
17	Voice 017	28				दृष्टा सत् व दृश्य असत् है : स्वरूप ज्ञान	
18	Voice 018	48				गीता - अ० ५/१-२ कर्म - ज्ञानयोग : भूमिका	a
19	Voice 019	33				जीव के कल्याण का साधन भगवान का ज्ञान, ज्ञान का साधन **चार कृपाऐं** एवं **अनादि के ६ प्रकार**	
20	Voice 020	42				गीता - अ० ४/२४-३७ अ०४ इति	9
21	Voice 021	47				गीता - अ० ५/१-५	b
22	Voice 022	32				**छः अनादि** : एक ब्रह्म अनादि अनंत, शेष पाँच अनादि सान्त । हमारा स्वरूप देह नहीं अपितु सच्चिदानंद देही है	
23	Voice 023	30				देह और देही दो पदार्थ हैं,सभी नाम-रूप देह हैं व इन सबमें बैठकर देखने वाला देही आत्मा है वही हमारा स्व०है	
24	Voice 024	46				गीता - अ० ५/१-५ :: कर्म-भक्ति-ज्ञानयोग क्रम समुच्चय, तीनों के फल में एकता अति विशिष्ट	c
25	Voice 025	33				**ओंकार का स्वरूप निरूपण** एवं स्वर-व्यंजन उत्पत्ति	1
26	Voice 026	42				गीता - अ० ५/६-६	d
27	Voice 027	33				गीता - अ० १३/२-३	
28	Voice 028	36				गीता - अ० ५/८-१०	e
29	Voice 029	32				**ओंकार का स्वरूप निरूपण**	2
30	Voice 030	42				गीता - अ० ५/८-६	f
31	Voice 031	32				गीता - अ० ६/१७	
32	Voice 032	43				गीता - अ० ५/११-१२	g
33	Voice 033	50				गीता - अ० ५/२०-२६ अ०५ इति	h
34	Voice 034	38				गीता - अ० ६/१-१० ध्यान योग : आत्म संयम योग	1